पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

# राजेश जोशी की कविताओं में अभिव्यक्त समाज

**भानुभक्त बस्नेत**
पीएच.डी. शोधार्थी
हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय
ईमेल:bhanu4basnet@gmail.com

**शोध-सार :** समकालीन हिंदी कविता में राजेश जोशी एक चर्चित नाम है। उनके द्वारा लिखी गई कविताएँ वर्तमान समाज में व्याप्त विविध परिस्थितियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। राजेश जोशी अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त असंगति, अंतर्विरोध, वर्ग भेद, जातीय शोषण, नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसी विसंगत परिस्थितियों का चित्रण करते हैं। समकालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण उनकी कविताओं में यथेष्ट है।

**बीज शब्द :** सामाजिक विसंगति, भूमंडलीकरण, पारिवारिक विघटन, अमानवीय प्रवृत्ति, वंचित वर्ग।

## मूल आलेख

राजेश जोशी समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवियों में से एक है। उन्होंने समकालीन परिवेश के तमाम साहित्यकारों को अपने चिंतन कौशल से प्रभावित किया है। समकालीन सामाजिक परिस्थिति की अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में हुई है। राजेश जोशी ने कविता, कहानी, नाटक, आलोचना, डायरी, अनुवाद, पटकथा, सम्पादन आदि साहित्यिक विधाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। 'समरगाथा' से लेकर 'उल्लंघन' तक की कविताओं में इन्होंने देश-

विदेश की सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। राजेश जोशी की कविताओं में सामान्य जनमानस के दुःख-दर्द का यथार्थ चित्र दृष्टिगत होता है। राजेश जोशी ने 'रैली में स्त्रियाँ', 'बेटी की बिदाई', 'अस्त व्यस्त चीजें', 'यह स्वस्थ्य के लिए हानिकारक है' 'टॉमस मोर', जैसी कविताओं की रचना की, जिसके माध्यम से हम वर्तमान समय एवं समाज के यथार्थ रूप को पहचान सकते हैं। इनकी कविताएँ देश में व्याप्त राजनीतिक व्यवस्था से सीधा सवाल करती है एवं सत्ता की तीखी आलोचना करती है। इसके अलावा इनकी कविताओं में समाज के सभी वर्गों का वास्तविक चित्रण मौजूद है एवं तत्कालीन समाज की परिस्थितियां उनके यहाँ बहुत यथार्थ ढंग से चित्रित हैं।

साहित्यकार अपने समय का संवाहक होता है। वह विभिन्न घटना, संदर्भों आदि के माध्यम से समाज को एक नया मार्ग प्रदान करता है। समाज सुधार में साहित्य की भूमिका स्पष्ट दृष्टिगत होता है। इस बात की पुष्टि हमें हमारे पूर्व रचना और रचनाकार से प्राप्त होता है। किसी भी राष्ट्र अथवा देश की सभ्यता एवं संस्कृति को जानने के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम है। जैसे महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों के अध्ययन से हमें उस समय की सामाजिक परिवेश, व्यवस्था, रीति-रिवाज और रहन-सहन के विषय में ज्ञान प्राप्त होती है। सामाजिक बोध के अनुरूप साहित्यकार की रचना कालजयी बनती है क्योंकि वह व्यक्ति, जाति, वर्ग और समाज की भीतरी-बाहरी शक्तियों को पैनी दृष्टि से परखता हुआ एक उचित मार्ग निर्देशित करता है। राजेश जोशी ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त असंगति, अंतर्विरोध, वर्ग भेद, जातीय शोषण, नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसी विसंगतियों का चित्रण किया है। राजेश जोशी की कविताओं में उदारीकरण और भूमंडलीकरण के दौर से प्रभावित भारतीय समाज का चित्रण खूब मिलता है। "भारतीय समाज की नयी जटिलताओं के साथ कवि अपनी काव्य सामग्री को पुनः व्यवस्थित करते हैं और मानव मन के नए पेंचों को सामने लाते हैं।"[1] इन्हीं पेंचों से कवि भारतीय समाज का लेखा-जोखा करते हैं। जिसमें जीवन के सारे पक्ष प्रेम, घर, गृहस्थी, परिवार, भाईचारा आदि आते हैं। राजेश जोशी के काव्य में जनवादी विचार प्रखर

रुप से दृष्टिगत होता है। इन्होंने अपनी कविताओं में सामाजिक विसंगतियों का चित्रण बहुत बारीकी से किया है। साहित्यकार जिस समाज में रहता है उसकी व्यवस्था एवं स्थिति से निरंतर प्रभाव ग्रहण करता है। इन्होंने अपने काव्य में मशीनीकरण के प्रारंभिक दौर से उसके विकराल रूप धारण करने तक के सफर के दुष्प्रभावों एवं दुष्परिणामों का क्रमशः वर्णन किया है। इनकी कविता संग्रह 'चाँद की वर्तनी' 'दो पंक्तियों के बीच' और 'ज़िद' में समाज के बदलते स्वरूप को दिखाया गया है। बाजारवाद, शहरीकरण, भूमंडलीकरण जैसी प्रवृत्तियों ने हमारी पारिवारिक जीवन को ही परिवर्तित कर दिया। इस प्रसंग में इनकी 'संयुक्त परिवार' जैसी रचना को एक मिसाल के तौर पर देख सकते हैं। इस कविता में कवि वर्तमान समय में एकल परिवार के यथार्थ पक्ष को हमारे समक्ष रखते हैं। भले ही इस एकल परिवार में सभी भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं परन्तु पहले संयुक्त परिवार में जो खुशियाँ थी वह आज दुर्लभ है । संयुक्त परिवार टूटने के बाद एकल परिवार में किस प्रकार की समस्याएं आती हैं, इसका चित्रण हम 'रात किसी का घर नहीं' जैसी कविता में देख सकते हैं- "एक बूढ़ा मुझे ........ / कहता है कि उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है / कि उसने पिछले तीन दिन से / कुछ नहीं खाया है / लड़कों के बारे में बताते हुए वह अकसर रुआँसा हो जाता है / और अपनी फटी हुई / कमीज को उघाड़कर / मार के निशान दिखाने लगता है।"[2]

इस प्रकार बदलते हुए समाज में आम आदमी का कोई अस्तित्व नहीं है। नई कविता में आम आदमी के लिए 'लघुमानव' शब्द का प्रयोग किया गया था। इसी प्रकार राजेश जोशी ने सामान्य जन के लिए 'इत्यादि' शब्द का प्रयोग किया है। एक आम आदमी राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निर्वहन करता है परंतु उसे बस किसी सिरफिरे कवियों की कविता में ही उद्धृत किया जाता है। इस प्रकार की विसंगत एवं दयनीय स्थितियों का चित्रण राजेश जोशी ने 'इत्यादि' कविता में किया है। "राजेश जोशी की लेखनी की सबसे बड़ी खासियत है कि अपने समय को सजग रूप में पहचानना और अपनी रचनाओं के माध्यम से बदलते हुए समाज को प्रस्तुत करना है। राजेश जोशी आम आदमी के साथ खड़े होकर वहां से चीजों को देखते हैं,

इसलिए उन्हें वहां से चीजें ज्यादा साफ और स्पष्ट दिखती है।"[3] इस कथन से भी हम यह समझ सकते हैं कि राजेश जोशी का रचनाशील मन अपने समय के प्रति प्रतिबद्ध है।

वैज्ञानिक युग की बदलती हुई मानवीय मूल्यों ने अपनी दस्तक जिस तीव्रता से दी है उससे कवि वर्ग अवश्य आहत एवं आकर्षित हुआ है। नैतिक मूल्यों के पक्षधर राजेश जोशी ने भी इस परिवर्तित परिवेश की मूल्यहीनता को गहनता से अनुभूत किया है। समाज में उपस्थित विसंगतियों को प्रतीक के माध्यम से उद्घाटित करते हुए इन्होंने 'कौवा और मूर्ति' जैसी कविता की रचना की है। इस कविता में सत्य, अहिंसा, परोपकार जैसी मानवीय प्रवृत्तियां विलुप्त हो रही है। समाज में फैल चुकी इस तरह की बुराइयों के प्रति कवि चिंतित दिखाई देते हैं। इसलिए वे कहते हैं -"गांधीजी के माथे से आंख के पास तक / बह आई कौवे की बीट सूखकर सफेद हो रही है / अँधेरा इतना गहराता जा रहा है / कि गांधीजी के मूर्ति अँधेरे में विलीन हो गई है / और कौवा अब कहीं नहीं है / सिर्फ बीट का सफेद दाग चमक रहा है / अंधेरे में!"[4]

वर्तमान समय में हम स्वतंत्र देश में जी रहे हैं परंतु यह स्वतंत्रता आज समाप्त होती दिखाई देती है। आज के समय में एक सचेत नागरिक अपने अधिकारों की बात करता है तो उसे 'राम दास' की तरह दिन दहाड़े मार दिया जाता है। राजेश जोशी ने भी समाज एवं सत्ता की इस प्रकार की प्रवृत्तियों को देखा है और अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं -" विरोध करने वालों में से हत्यारे किसी एक को चुनते हैं /और मार डालते हैं उसे सरेआम"[5] इस प्रकार की सामाजिक परिस्थिति एवं घटनाओं से राजेश जोशी भलीभांति परिचित है।

वर्तमान समय में दुनिया विकास की चरम बिंदु पर खड़ी है। हम आधुनिकता से उत्तर-आधुनिकता में प्रवेश कर चुके हैं। विश्व के साथ-साथ भारत भी विकसित हो रहा है। इस प्रकार देखा जाए तो 21वीं शताब्दी के भारत में भौतिक संसाधनों की कोई कमी नजर नहीं आती। इस प्रकार की चका-चौंध से भरी दुनिया में भी व्यक्ति में अकेलेपन की प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही

है जिसके चलते व्यक्ति आज अकेलेपन, डिप्रेशन जैसी प्रवृत्तियों का शिकार हो रहा है । मनुष्य के मध्य से वर्तमान समय में हंसी लुप्त हो रही है। विकास के अनुरूप देखें तो जीवन में सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के चिह्न खूब बढे हैं, दुनिया खूब रंगीन, हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध है इसके बावजूद भी इंसान हंसी जैसी क्रिया को भूल रहा है। राजेश जोशी समाज में व्याप्त इस प्रकार की विसंगतियों के प्रति चिंता प्रकट करते हैं -"हंसी कम होती जा रही है धरती पर / अब तो नाटकों के विदूषक और सर्कसों में मसखरे भी / कभी-कभार ही दिखते हैं"[6]

कवि ने अपने काव्य में वर्तमान समय की सामाजिक संरचना को दर्शाते हुए अपनी बेचैनी प्रकट किया है। सब कुछ होने के साथ-साथ आज अपराधों की संख्या समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कवि अपने शब्दों में कहते हैं- "अपराध बढ़ रहे हैं धरती पर और पहले से कहीं ज्यादा खूंखार और ताकतवर हो रहे हैं अपराधी।"[7] इस प्रकार अपराधी का ताकतवर होना मानवता के लिए खतरे का बढ़ना है अतः हम यह कह सकते हैं कि राजेश जोशी ने समाज एवं राष्ट्र में फ़ैल रही अराजक तत्वों का चित्रण अपनी रचनाओं में बहुत ही यथार्थपरक ढंग से की है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं राजेश जोशी समाज में व्याप्त मानवता विरोधी विषम परिस्थितियों का प्रतिरोध करते दिखाई पड़ते हैं। राजेश जोशी जनप्रिय कवि हैं,इनकी कविताकों में वंचित वर्गों का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है। 'जन्म', 'नट', 'थोड़ी सी जगह', 'बच्चे काम पर जा रहे हैं', 'पत्ता तुलसी का', 'किस्सा-तोता-मैना' जैसी कविताएँ वंचित वर्गों की विशद विवशताओं का उद्घाटन करते हुए उनके प्रति संवेदनशील होने की वकालत करते हैं।

---

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:**

[1] सेन,अर्चना.*राजेश जोशी की कविताओं में सामाजिक मूल्य परिवर्तन की अभिव्यक्ति*.पृ. 42

[2] जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी* पृ.13

[3] नीरज.*राजेश जोशी स्वप और प्रतिरोध*.पृ.245

[4] जोशी,राजेश. *चाँद की वर्तनी*.पृ.73

[5] जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.33

[6] जोशी,राजेश. *ज़िद*.पृ.65

[7] जोशी,राजेश. *ज़िद*.पृ.66